सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी
(केन्द्रिक) 2016 सेट-1
(दिल्ली)

निर्देश:

- इस प्रश्न पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।
- विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (15)

प्रसिद्ध दार्शनिक नीत्शे एक ऐसा देवता तलाश रहे थे जो मनुष्य की पहुँच में हो। उसी की तरह नाच-गा सके। जीवन से भरपूर हो। हँसे-रोए काम करे-कराए बिलकुल आदमी की तरह। नीत्शे को ऐसा देवता नहीं मिला तो उसने कह दिया, "ईश्वर मर गया है।" लगता है कि नीत्शे को कृष्ण की जानकारी नहीं थी। वे नाचते-गाते हैं, काम करते हैं और योगी भी हैं - कर्मयोगी। काम करो, बाकी सब भूल जाओ - यह है उनका अनासक्त कर्म। यहाँ तक कि काम के फल की भी इच्छा मत करो - कर्मण्येवाधिकारस्ते। अजीब विरोधाभास है ! काम करने का निराला ढंग है कि काम तो पूरे मन से करो, ईश्वर का आदेश समझकर करो पर उससे परे भी रहो ! काम पूरा होते ही अनासक्त हो जाओ। यों कृष्ण जो भी करते हैं उसमें गजब की आसक्ति दिखाई देती है- चाहे ग्वाले का काम हो, रसिक बिहारी का हो, सारथि का हो, उपदेष्टा या मार्गदर्शक का – वे पूरे मनोयोग से अपनी भूमिका निभाते दिखाई पड़ते हैं और अगले ही क्षण उससे अलग; जैसे कमल-पत्ते पर पड़ा पानी। जीवन का प्रत्येक पल पूरेपन से जीना और चिपकना नहीं - यही अनासक्ति है। उनमें कहीं अधूरापन दिखाई ही नहीं देता। पीछे मुड़ने का उन्हें अवकाश ही नहीं है। यह कृष्ण जैसा कर्मयोगी ही कर सकता है। वे विश्वरूप हैं परंतु अहंकार का कहीं नाम तक नहीं। गाय चराने या रथ हाँकने का काम करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं।

(क) नीत्शे कौन थे? वे क्या तलाश रहे थे? (2)

(ख) 'ईश्वर मर गया है' - नीत्शे ने यह क्यों कहा होगा? (2)

(ग) कृष्ण के व्यक्तित्व में क्यों 'विराधाभास' लगता है? (2)

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए 'कर्मण्येवाधिकारस्ते...' (2)

(ङ) कृष्ण की किन विविध भूमिकाओं का उल्लेख है? (2)

(च) कृष्ण के लिए 'कमल-पत्ते पर पड़ा पानी' क्यों कहा गया है? (2)

(छ) कृष्ण के व्यक्तित्व से हम क्या सीख सकते हैं? दो बातों का उल्लेख कीजिए। (2)

(ज) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

उत्तर- (क)

- प्रसिद्ध दार्शनिक।
- ऐसे देवता की तलाश, जो मनुष्य की पहुँच में हो।

(ख)

- मनुष्य की भाँति कार्यकलाप करता हुआ।
- जीवन रस से भरपूर ईश्वर नहीं मिला।

(ग)

- कृष्ण के कर्मों से आसक्ति एवं अनासक्ति दोनों का एक साथ प्रस्तुत होना।
- नाचते-गाते भी हैं और योगी भी।

(घ)

- कर्म करो।
- फल की इच्छा मत करो।

(ङ)

- गोपालक।
- रसिक बिहारी
- सारथी
- उपदेशक
- मार्गदर्शक।

(च)

- कार्य से जुड़ने भी हैं और अलग भी।
- कमल के पत्ते पर पड़ा पानी उस पर रह कर भी अलग होता है।

(छ)

- प्रत्येक भूमिका में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना।
- कर्म करना परंतु फल की इच्छा न करना।
- अनासक्त योगी।
- अहंकार रहित जीवन।
  (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख।)
  (अन्य उपयुक्त उत्तर भी स्वीकार्य।)

(ज)

- आदमी जैसा देवता।
- कर्मयोगी कृष्ण।
  (अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकार्य।)

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (1×5=5)

साकार दिव्य गौरव विराट, पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिमकिरीट, मेरे भारत के दिव्य भाल !

मेरे नगपति, मेरे विशाल !

युग-युग अजेय, निर्बंध, युक्त,

युग-युग गर्वोन्नत नित महान

निस्सीम व्योम में तान रहा

युग से किस महिमा का वितान !

ले अँगड़ाई हिल उठे धरा

कर निज विराट स्वर में निनाद

तू शैलराट् हुंकार भरे

फट जाए कुहा, भागे प्रमाद

तू मौन त्याग, कर सिंहनाद

रे तपी, आज तप का न काल

नव युग शंखध्वनि जगा रही

तू जाग-जाग मेरे विशाल !

(क) 'मेरी जननी' से क्या तात्पर्य है? उसका किरीट किसे माना है?

(ख) विशाल नगपति के लिए प्रयुक्त किन्हीं दो विशेषणों को स्पष्ट कीजिए।

(ग) हिमालय से अँगड़ाई लेने का अनुरोध क्यों किया जा रहा है?

(घ) शैलराट् नाम की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव लिखिए।

उत्तर- (क)

- भारत भूमि को।
- हिमालय को।

(ख)

- अजेय - जिसे जीता नहीं जा सकता।
- निर्बंध - जिस पर किसी का अंकुश नहीं।
- गर्वोन्नत - गर्व से माथा ऊँचा किए हुए।
  (अन्य उपयुक्त विशेषणों का उल्लेख भी स्वीकार्य।)

(ग)

- परिवर्तन के लिए।
- क्रांति कामना।

(घ) विशाल, ऊँचा, बड़ा, पर्वतों का राजा।

(ङ)

- शक्ति की पहचान कर उठ खड़ा होने की प्रेरणा।
- क्रांति का आह्वान।

खण्ड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर एक निवन्ध लिखिए: (5)

(क) शिक्षा का अधिकार

(ख) क्यों पढ़े हम हिंदी

(ग) अबला नहीं है नारी

(घ) आतंकवाद की समस्या

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

- भूमिका एवं उपसंहार
- विषय-वस्तु
  (किन्हीं तीन बिंदुओं का विवेचन)
- भाषा की शुद्धता एवं प्रस्तुति

4. किसी आपराधिक घटना की अपनी सनसनीखेज पड़ताल से कुछ समाचार चैनल जाँच में बाधा डालते हैं और न्यायालयों में मामला पहुँचने से पहले ही आरोपी को अपराधी ठहरा देते हैं। इस प्रवृत्ति पर अपने विचार किसी समाचार-पत्र के संपादक को लिखिए। 5

उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ
- प्रभावी विषय-वस्तु
- भाषा की शुद्धता, प्रवाह एवं लेख

अथवा

आपके विद्यालय में फ़र्नीचर की आपूर्ति के लिए 'काष्ठागार', आमेर सरणि, जयपुर को आदेश दिया गया था किंतु उन्होंने संविदा में उल्लिखित समझौते के अनुसार आपूर्ति नहीं की। संस्था के प्रबंधक को पत्र लिखकर उल्लंघनों का बिंदुवार उल्लेख करते हुए प्राचार्य की ओर से शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ
- प्रभावी विषय-वस्तु
- भाषा की शुद्धता, प्रवाह एवं लेख

5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए: (1×5=5)

(क) प्रिंट माध्यम की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) स्पष्ट कीजिए कि संपादकीय के साथ उसके लेखक पत्रकार का नाम क्यों नहीं दिया जाता?

(ग) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर स्पष्ट कीजिए।

(घ) समाचार के 'इंट्रो' और 'बॉडी' से आप क्या समझते हैं?

(ङ) वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए।

उत्तर- (क)

- स्थायित्व।
- पढ़ने के साथ चिंतन-मनन।
- बार-बार पढ़ने की सुविधा।
  (कोई दो बिंदु)

(ख)

- संपादकीय लेख संपादक की व्यक्तिगत राय नहीं।
- सूचनाओं की निरपेक्ष/तटस्थ प्रस्तुति।

(ग) बीट रिपोर्टिंग-

- संवाददाता की उस क्षेत्र में जानकारी एवं दिलचस्पी होना।
- अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरों का लेखन।

विशेषीकृत रिपोर्टिंग-

- विशेष क्षेत्र से जुड़ी खबरों का बारीकी से विश्लेषण और पाठकों के लिए स्पष्टीकरण की कोशिश।

(घ)

- इंट्रो - मूल/मुख्य खबर।
- बॉडी - खबर का विस्तार।

(ङ)

- सरकार के कामकाज पर निगाह रखना।
- गड़बड़ियों का पर्दाफाश करना।

6. 'मोर्चे पर सैनिकों के साथ एक दिन' अथवा 'भूकंप क्षेत्र से' विषय पर मुद्रण माध्यम के लिए एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- किसी एक विषय पर फीचर लेखन-

- विषय - वस्तु
- प्रभावी प्रस्तुति
- भाषा की शुद्धता

7. 'किसान का संघर्ष' अथवा 'बढ़ते अपराध' विषय पर एक आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- किसी एक विषय पर आलेख लेखन-

- विषय - वस्तु
- प्रभावी प्रस्तुति
- भाषा की शुद्धता

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×4=8)

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने

चिड़िया क्या जाने?

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने

कविता का खिलना भला फूल क्या जाने

(क) कविता की तुलना चिड़िया से क्यों की गई है?

(ख) चिड़िया कविता की उड़ान को क्यों नहीं समझ सकती?

(ग) कविता के खिलने और फूलों के खिलने में क्या साम्य-वैषम्य है?

(घ) काव्यांश के आधार पर कविता के दो लक्षणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- चिड़िया की उड़ान को कविता की उड़ान से जोड़ना।
- बंधनहीन और कल्पना का असीम विस्तार।

(ख) चिड़िया के उड़ने की एक सीमा है जबकि कविता की उड़ान देश, काल और परिस्थिति से बाहर संभव।

(ग) साम्य-

- कविता के सृजन एवं फूलों के खिलने से प्रसन्न होना।
- वातावरण का मोहक एवं आकर्षक होना।

वैषम्य-

- फूल के खिलने के साथ-साथ उसकी परिणति निश्चित है जबकि कविता कालातीत होती है।

(घ)

- कविता असीम होती है।
- इसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है।

अथवा

जथा पंख बिनु खग अति दीना।

मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।

जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

जैहउँ अवध कवन मुहु लाई।

नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं।

नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

(क) यह किसका प्रलाप है और क्यों किया जा रहा है?

(ख) 'फणी' और 'करिबर' से तुलना का औचित्य बताइए।

(ग) अवध लौटने में किस प्रकार का संकोच बताया गया है?

(घ) काव्यांश के आधार पर नारी के प्रति तुलसी के दृष्टिकोण पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क)

- राम का।
- लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्यथित होने के कारण।

(ख) मणि के बिना जो स्थिति साँप की तथा सूँड के बिना जो स्थिति हाथी की होती है वही दयनीय स्थिति लक्ष्मण के बिना राम की भी है।

(ग)

- पत्नी के लिए भाई को खो देने की बात।
- बदनामी का डर।

(घ) लोकमत के अनुसार तुलसी ने नारी के महत्व को पुरुष से कम माना है,
क्योंकि वे कहते हैं-
'नारि हानि विसेष छति नाहीं'
(अन्य उपयुक्त उत्तर भी स्वीकार्य।)

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×3=6)

गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब

यह विचार वैभव सब

दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह, अभिनव सब

मौलिक है, मौलिक है।

(क) 'गरीबी' के लिए प्रयुक्त विशेषण का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'भीतर की सरिता' क्या है? वह अभिनव क्यों है?

(ग) काव्यांश के भाषा-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- (क)

- गरीब का स्वाभिमान/आत्मसम्मान बना रहे।
- उसे किसी के सामने सिर न झुकाना पड़े।

(ख)

- भावनाओं का सहज उद्रेक।
- मौलिकता के कारण अभिनव।

(ग)

- मुक्त छंद।
- प्रवाहमयी व सहज भाषा।
- प्रतीकात्मक।

अथवा

सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नई साइकिल तेज़ चलते हुए

(क) सवेरे की तुलना किससे की गई है? क्यों?

(ख) काव्यांश के प्रतीकों को समझाइए।

(ग) मानवीकरण अलंकार का उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- खरगोश की आँखों से।
- लालिमा और चमक के कारण।

(ख)

- लाल सवेरा - सूर्योदय।
- पुल - मौसमों को जोड़ने का।
- नई साइकिल - मौसम की नवीनता।

(ग)

- मानवीकरण अलंकार-
  ‘शरद आया.............चलाते हुए।’
- विभिन्न मौसमों को पार करके आते हुए शरद का सुंदर चित्रण।
- शरद की भोर को मानवीय व्यवहार की तरह प्रकट किया गया है।

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)

(क) ‘दिन जल्दी-जल्दी ढलता है’ में पक्षी तो लौटने को विकल हैं, पर कवि में उत्साह नहीं है। ऐसा क्यों?

(ख) ‘कैमरे में बंद अपाहिज' में निहित क्रूरता को उजागर कीजिए।

(ग) ‘बादल राग' के आधार पर धनी शोषकों की जीवन शैली पर टिप्पणी कीजिए। वे क्यों त्रस्त हैं?

उत्तर- (क)

- पक्षियों को बच्चों से मिलने की उत्सुकता।
- कवि के लिए कोई प्रतीक्षारत नहीं
- कोई प्रेरणा न होने के कारण चाल में सुस्ती और मन में विह्वलता।

(ख)

- शारीरिक चुनौती को झेलते हुए व्यक्ति के प्रति संवेदनहीन।
- अपाहिज व्यक्ति से बार-बार उसकी कमज़ोरियों/चुनौतियों के विषय में चुभने वाले प्रश्न पूछना।
- संवेदना का उत्पाद के रूप में बाज़ारीकरण।

(ग)

- धनी व्यक्ति को आम आदमी के सुख-दुख से कोई सरोकार नहीं।
- बड़े-बड़े भवनों में सुविधा-संपन्न जीवन जीना।
- अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु निम्न वर्ग का शोषण करना।
- संभावित क्रांति के कारण अस्तित्व संकट में।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2×4=8)

भारतीय परंपरा में व्यक्ति के अपने पर हँसने, स्वयं को जानते-बूझते हास्यास्पद बना डालने की परंपरा नहीं के बराबर है। गाँवों या लोक संस्कृति में तब भी वह शायद ही, नागर-सभ्यता में तो वह थी ही नहीं। चैप्लिन का भारत में महत्व यह है कि वह ‘अंग्रेज़ों जैसे

व्यक्तियों पर हँसने का अवसर देते हैं। चार्ली स्वयं पर सबसे ज्यादा तब हँसता है जब वह स्वयं को गर्वोन्मत्त, आत्मविश्वास से लबरेज़, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति, दूसरों से ज्यादा शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ अपने 'वज्रादपि कठोराणि' अथवा 'मृदूनि कुसुमादपि' क्षण में दिखलाता है।

(क) अनुच्छेद में किसकी चर्चा है? वह क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) "अपने आप को जानते-बूझते हास्यास्पद बना डालने की परंपरा नहीं के बराबर है।" - इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) "अंग्रेज़ों जैसे" कहने का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) चार्ली अपने पर कब हँसता है?

उत्तर- (क)

- चार्ली चैपलिन की।
- अपने को उपहास का पात्र बनाकर दूसरों को हँसाने की कला के कारण।

(ख)

- भारतीय परंपरा में नायक के स्वयं पर हँसने का कोई उदाहरण नहीं के बराबर।
- हास्य उत्पन्न करने के लिए नायक से भिन्न अन्य पात्र की आवश्यकता।

(ग)

- अंग्रेज सत्ता/शासक के प्रतीक।
- अंग्रेजियत से प्रभावित लोग।
- ऐसे वर्ग पर भी हँसा जा सकता है - यह भाव।

(घ)

- जब वह स्वयं को गर्वोन्मत्त,
- आत्मविश्वास से लबरेज,
- अधिक शक्तिशाली,
- दूसरों से अधिक श्रेष्ठ आदि स्थितियों में प्रस्तुत करता है।
  (अन्य उपयुक्त उत्तर भी स्वीकार्य।)

अथव |

हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र

लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर, अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

(क) लेखक को क्यों लगता है कि आज हम देश के लिए कुछ नहीं करते?

(ख) भ्रष्टाचार को लेकर हमारे व्यवहार में क्या विसंगति है?

(ग) सुविधाओं की बरसात से भी गरीब को कोई लाभ नहीं मिलता, इस बात को लेखक ने कैसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?' इस प्रश्न का आप क्या उत्तर देंगे? तर्क सहित समझाइए।

उत्तर- (क)

- समाज में स्वार्थपरता की अधिकता।
- त्याग, समर्पण, सहानुभूति जैसे मूल्यों का अभाव।

(ख)

- कथनी और करनी में अंतर।
- चर्चा अधिक और उसका क्रियान्वयन कम।
- दोषारोपण की प्रवृत्ति।

(ग)

- गरीबों के हितों के लिए अनेक योजनाएँ बनती हैं।
- भ्रष्ट व्यवस्था के कारण गरीबों को लाभ नहीं।
- प्रतीकात्मक भाषा में - मेघ दल का उमड़ना एवं बरसना, किंतु गगरी तक लाभ नहीं।
- 'गगरी' सरकारी योजनाओं का और 'प्यासा बैल' जरूरतमंद व्यक्ति का प्रतीक है।

(घ)

12. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3×4=12)

(क) डॉ. भीमराव आंबेडकर के मतानुसार दासता की व्यापक परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

(ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के संदर्भ में महात्मा गांधी का स्मरण क्यों किया है? साम्य निरूपित कीजिए।

(ग) 'मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से न देश बँटता है, न जनता' - 'नमक' कहानी के आलोक में प्रतिपादित कीजिए।

(घ) बाज़ार का बाज़ारूपन क्या है? पाठ के आधार पर समझाइए।

(ङ) 'पहलवान की ढोलक' कहानी के संदेश को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- (क)

- अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न होना।
- दूसरों की इच्छानुसार कार्य करने की बाध्यता।
- कानूनी पराधीनता की दासता।

(ख)

- जैसे शिरीष वायुमंडल से रस प्राप्त करता है वैसे ही गांधी जी समाज से संवेदनाओं को ग्रहण करते हैं।
- शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी अपने अस्तित्व को बनाए रखता है, गांधी भी विपरीत परिस्थितियों में झुकते नहीं।
- शिरीष की पत्तियाँ और शाखाएँ भी कोमल हैं वैसे ही गांधी समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए संवेदनशील।

(ग)

- दोनों ओर एक-सी ज़मीन।
- एक ही भाषा।
- सूरतें और लबोलहजा भी एक-सा।
- दोनों का परस्पर भावनात्मक संबंध।

(घ)

- लोगों को अपनी ओर विशेष रूप से आकर्षित करना।
- 'पर्चेजिंग पावर' वाले लोगों को अधिक खर्च करने पर विवश करना।
- कपट को बढ़ावा देना।

(ङ)

- बदलती व्यवस्थाओं के साथ लोक-कलाओं की गिरती लोकप्रियता।
- लोक-कलाकारों की उपेक्षा की ओर संकेत।
- भूख व महामारी से दम तोड़ते असहायों को मौत से लड़ने का साहस देना।

13. 'डायरी के पन्ने' के आधार पर ऐन फ्रैंक के जीवन से प्राप्त होने वाले जीवन मूल्यों की चर्चा कीजिए। (5)

उत्तर-

- संवेदनशीलता।
- साहसी।
- परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की क्षमता।
- समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध।
  (अन्य उपयुक्त उत्तर भी स्वीकार्य।)

14. (क) यशोधर बाबू की पत्नी स्वयं को समय के अनुकूल ढाल लेती हैं किंतु यशोधर ऐसा नहीं कर पाते। कारण सहित समीक्षा कीजिए। (5)

(ख) 'जूझ' कहानी के आधार पर लेखक के जीवन संघर्ष को संक्षेप में वर्णित कीजिए। (5)

उत्तर- (क)

- यशोधर बाबू आदर्शों व वैचारिक मूल्यों पर अडिग।
- यशोधर बाबू की पत्नी व्यावहारिक भाव-प्रबल होने के कारण, नई पीढ़ी के साथ समायोजन कर लेती है।
- सिल्वर वेडिंग के अवसर पर मुख्य-उत्सव से अलग पूजा में अधिक समय बिताना।
- यशोधर बाबू की पत्नी नई पीढ़ी के अनुरूप परिधान व शैली अपना लेती है।

(ख)

- जूझ अर्थात संघर्ष।
- जीवन में प्रत्येक उपलब्धि जूझने के बाद मिली।
- पाठशाला जाने का संघर्ष।
- पिता द्वारा खेतों आदि के काम में झोंक दिए जाने पर अध्ययन करने हेतु संघर्ष।
- कक्षा में छात्रों के साथ सामंजस्य बिठाने का संघर्ष।
- कविता लेखन सीखने का संघर्ष।
  (अन्य विचार बिंदु भी स्वीकार्य।)